श्री शान्तिनाथ विधान

मंगल आशीर्वाद

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108 श्री विद्याभूषण

सन्मति सागर जी महाराज

एवं

समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य

108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज

रचयित्री

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,

गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी

प्रकाशक

श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)

Website : www.jainswastisandesh.com

Link to Facebook : swastibhushanmataji

श्री 1008 आदिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव
दिनांक 1 फरवरी से 6 फरवरी 2023, ज्ञानतीर्थ, मुरैना (म.प्र.)
पावन निर्देशन - परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,
गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी
पावन अवसर पर प्रकाशित

कृति	:	**श्री चन्द्रप्रभ विधान**
पंचम संस्करण	:	**1100 प्रतियाँ**
प्रकाशन वर्ष	:	**2023**
न्यौछावर राशि	:	**25.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)**
प्रकाशक	:	**श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)**

प्राप्ति स्थान :

1. **स्वराज कुमार जैन, अध्यक्ष श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 0129-4144329, 9868345768
2. **राहुल जैन, सचिव श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)**
   दूरभाष : 07906062500, 09212515167
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री आदिनाथ सेवा संस्थान**
   श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य-प्रदेश)
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रत नाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 9784853787

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

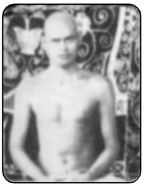

बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज 'छाणी' (उत्तर)

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (31.10.1888)
जन्म स्थान – ग्राम - छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम – श्री केवलदास जैन
पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति माणिक बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), ग्राम गढ़ी, बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी वि.सं. 1980 (23.09.1923), सागवाड़ा जिला-डूंगरपुर (राज.)
आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण – ज्येष्ठवदी दशमी (वि.सं. 2001) 17 मई, 1944, सागवाड़ा डूंगरपुर (राज.)

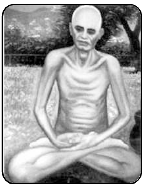

परम पूज्य प्रथम पट्टाचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं. 1940 (09.11.1883)
जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन
माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई जैन
ऐलक दीक्षा – आसोज शुक्ल छठ वि.सं. 1981 (04.10.1924, इन्दौर (म. प्र.)
मुनि दीक्षा – मार्गशीर्ष वदी ग्यारस वि.सं. 1981 (23.11.1924), हॉटपिपल्या जिला-देवास (म.प्र.)
दीक्षा गुरु – आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज से
आचार्य पद – कार्तिक शुक्ल दशमी वि.सं. 1985 (22.11.1928), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण – श्रावण कृष्ण अष्टमी वि.सं. 2009 (14.07.1952), डालमिया नगर (झारखंड)

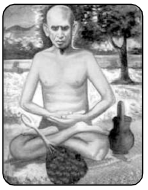

परम पूज्य द्वितीय पट्टाचार्य श्री 108 विजयसागर जी महाराज (वचन सिद्धि आचार्य)

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (26.01.1882)
जन्म स्थान – सिरौली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा – वि.सं. 2000 (सन् 1943) मारोठ जिला-नागौर (राज.)
दीक्षा गुरु – प्रथमपट्टाचार्य श्री 108 सूर्यसागर जी महाराज
आचार्य पद – लश्कर, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण – पौष वदी नवमी वि.स. 2019 (20.12.1962) मुरार, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)

परम पूज्य तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिण्ड वाले)

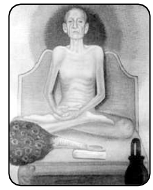

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (01.01.1892)
जन्म का नाम – श्री किशोरी लाल जैन
जन्म स्थान – ग्राम-मोहना, जिला-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति मथुरा देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – वि.सं. 1997 (सन् 1941)
ऐलक दीक्षा – कापरेन नगर जिला कोटा (राज.)
मुनि दीक्षा – अगहन वदी पंचमी वि.सं. 2000 (17.11.1943) कोटा (राज.) में
दीक्षा गुरु – द्वितीय पट्टाचार्य श्री विजयसागर जी महाराज द्वारा पाटन, झालावाड़ (राज.)
आचार्य पद – वि.सं. 2030 (सन् 1973), हाड़ौती (राज.) में
समाधिमरण – बैशाख कृष्ण अष्टमी, वि.सं. 2030 (26.04.1973), दिन गुरुवार, सांगोद जिला कोटा (राज.)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य चतुर्थ पट्टाचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज

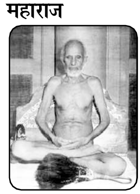

जन्म तिथि – आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (20.10.1917)
जन्म स्थान – ग्राम - श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम – श्री छिद्दूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमति चिरौंजी देवी जैन
ऐलक दीक्षा – चैत शुक्ल त्रियोदशी वि.सं. 2025 (11.04.1968), रिवाड़ी (हरियाणा) में
ऐलक नाम – श्री वीरसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – अगहन वदी द्वादशी वि.सं. 2025 (17.11.1968), गाजियाबाद (उ.प्र.)
आचार्य पद – ज्येष्ठ सुदी पंचमी वि.सं. 2030 (05.06.1973), मुरैना (म.प्र.) (तृतीय पट्टाचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण – क्वार वदी त्रियोदशी वि.सं. 2051(03.10.1994), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)

परम पूज्य पंचम पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

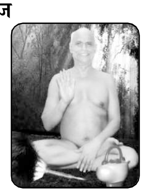

जन्म तिथि – अगहन वदी चतुर्थी, वि.सं. 2006 (10.11.1949)
जन्म स्थान – बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम – श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती सरोज देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – फाल्गुन शुक्ल तृतिया वि.सं. 2028 (17.02.1972) श्री सम्मेदशिखर जी (झारखंड)
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरी जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद – चैत्र सुदी पंचमी वि.सं. 2046, (10.04.1989) नरवर जिला- शिवपुरी (म.प्र.) पंचकल्याणक महोत्सव के उत्सव पर
समाधिमरण – फाल्गुन सुदी तृतीया वि.सं. 2069 (14.03.2013)

परम पूज्य राष्ट्रसंत, सराकोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति षष्टपट्टाचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज

जन्म तिथि – वैशाख सुदी द्वितीया, वि.सं. 2014 (01.05.1957)
जन्म स्थान – मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम – श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती अशर्फी देवी जैन
ब्रह्मचर्य व्रत – वि.सं. 2031 (सन् 1974)
क्षुल्लक दीक्षा – कार्तिक सुदी चतुर्दशी वि.सं. 2033 (05.11.1976) सोनागिरि सिद्धक्षेत्र में
क्षु. दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम – क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
मुनि दीक्षोपरान्त नाम – मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद – माघ वदी अष्टमी वि.सं. 2045 (30.01.1989), सरधना (मेरठ)
आचार्य एवं षष्ठपट्टाचार्य पद – ज्येष्ठ वदी तृतीया वि.सं. 2070 (27.05.2013) तीर्थ क्षेत्र बड़ागाँव जिला-बागपत (उ.प्र.)
समाधि – कार्तिक कृष्ण अमावस्या वि.सं. 2077, भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव, 15.11.2020, दिन रविवार, बारां (राज.)

गणिनी आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि – 1-11-1969 कार्तिक कृष्ण सप्तमी दिन, शनिवार (वि.सं. 2026)
जन्म स्थान – छिंदवाडा (मध्य प्रदेश) बचपन सिवनी
जन्म नाम – संगीता जैन (गुड़िया)
पिता का नाम – श्री मोती लाल जैन (निवासी सिवनी)
वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम – श्रीमती पुष्पा देवी जैन
वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
प्रथम ब्रह्मचर्य व्रत – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
लौकिक शिक्षा – एम. ए. (संस्कृत)
आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत
दीक्षा गुरू – प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शान्ति सागर जी (छाणी) महाराज (उत्तर) के पंचम पट्टाचार्य सिंहरथ प्रवर्तक त्रिलोकतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान – 24 जनवरी 1996 माघ शुक्ल पंचमी, दिन बुधवार, (वि.सं. 2052) इटावा (उ.प्र.)
वर्तमान पट्टगुरु व
गणिनी पद प्रदाता – परम पूज्य सराकोद्धारक तीर्थोद्धारक षष्ठम पट्टाचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज
तिथि एवं स्थान – 13 फरवरी 2020 फाल्गुन कृष्ण पंचमी, दिन बृहस्पतिवार (वि.सं. 2076), तीर्थ क्षेत्र स्वस्ति धाम, जहाजपुर (राजस्थान)

शांति की खोज

अनादिकाल से भटकता प्राणी, मात्र शांति की खोज कर रहा है। एक व्यक्ति सुबह घर से दुकान जाता है शांति के लिये, एक व्यक्ति कहता है कि बस लड़की की शादी हो जाये, मुझे शांति मिल जायेगी अर्थात् संसार का हर प्राणी जो भी पुरूषार्थ करता है शांति के लिये, किन्तु शांति फिर भी नहीं मिल पा रही है। संसार में शांति की खोज मृग मरीचिका है। जैसे–रेगिस्तान में एक प्यासा हिरण दूर से देखता है कि वहां सरोवर है। पर वहां रेत चमक रही है। दौड़कर वह वहां पहुंचता है, वहां पानी नहीं मिलता, इसी तरह वह पूरे दिन दौड़ता रहता है और उसकी मृत्यु हो जाती है। ठीक इसी तरह संसारी प्राणी संसार की वस्तु की प्राप्ति में शांति मानता है, किन्तु सारी जिंदगी निकल जाती है, शांति नहीं मिलती है।

शांति की खोज बाहर नहीं अंदर कीजिये शीघ्र शांति मिलेगी। बाहर की मोह माया में शांति असंभव है। श्री शांति प्रभु के पास मोह और माया का अपार वैभव था। अर्थात् मोह कराने 96 हजार रानियों का परिवार तथा चक्रवर्ती की संपदा, छह खंड का राज्य, हजारों नौकर चाकर आगे पीछे घूमते थे। फिर भी शांति प्रभु को वहां शांति नहीं मिली। मन की शान्ति की खोज में निकल पड़े। सब कुछ छोडकर वनवास धारण किया।

या संसार विषै सुख होता, तीर्थंकर क्यों त्यागें।
काहे को शिव साधन करते, संयम सो अनुरागें।।

शांति महलों में नहीं जंगल में मिली। शांति बाह्य लक्ष्मी में नहीं अंतरंग ज्ञान लक्ष्मी में मिली। आत्मा का ध्यान ही सच्ची शांति है। पर को छोड़ते ही स्व की प्राप्ति हुई। स्वभाव में आते ही चारों दिशाओं में शांति फैल गई।

आज हर व्यक्ति की शांति खो गई है। अशांत मानव संसार में भटकता अशांति फैला रहा है। जैसे शांत सरोवर में कंकड़ फेंकने पर लहरें उठती हैं। जितने कंकड़ डालते जाओ, लहरें उठती रहेंगी। किन्तु कंकड फेकना बंद होते ही सरोवर फिर शांत हो जायेगा। इसी तरह हम प्रतिक्षण

मन रूपी सरोवर में राग, द्वेष, मोह, माया, लोभ पापादि के कंकड़ डालकर मन को अशांत करते हैं। डालने का क्रम अनवरत चल रहा है, विराम का नाम नहीं है। इसलिये जीवन में क्षण भर को भी शांति नहीं मिलती।

भगवान की मुद्रा को निहारो, कैसी शांत मूरत है। आत्मा के ध्यान में लीन हैं ठीक ऐसे ही हम ध्यान लगाकर बैंठें तो हमें शांति निश्चित रूप से प्राप्त होगी। ऐसे महान तीर्थंकरों की भक्ति पूजा से हमारे अंदर उन्हीं गुणों का समावेश होता है। अतः हमें प्रभु पूजा निरंतर करनी चाहिये।

उदाहरण—एक हाथी जंगल में रहता था। वहीं एक बड़े वृक्ष की कोटर में एक जिन प्रतिमा थी। हाथी को जाति स्मरण हुआ कि पहले मनुष्य पर्याय में वह पूजा अभिषेक किया करता था। उसकी भक्ति जाग्रत हुई और वह प्रतिदिन पूजा अभिषेक करने लगा। सुबह नदी में जाकर जोर से फूंक मारकर पानी प्रासुक कर सूंड में भरता और लाकर उससे भगवान का न्हवन करता। फिर जंगल से फूल लाता और चरण में चढ़ाकर पूजा करता। तत्पश्चात ही कुछ खाता पीता था। पास के गांव के लोगों को पता चला, तो जब वहां हाथी नहीं था, जिन प्रतिमा उठा लाये। हाथी लौटकर आया उसने देखा कि उसके भगवान नहीं हैं। वह बहुत रोया तड़फा और अन्न जल का त्याग कर दिया। प्रतिमा के दर्शन जब कई दिन तक नहीं हुये तो उस हाथी की मृत्यु हो गयी। समता भाव से, भक्ति के भाव से, मृत्यु को प्राप्त हुआ तो वह मरकर बारहवें स्वर्ग गया और वहां प्रभु की पूजा भक्ति करने लगा।

अर्थात् भगवान की भक्ति से मनुष्य तो क्या, तिर्यंच प्राणी का भी उद्धार हो जाता है। प्रभु की भक्ति, पतित को पावन, कंकड़ को शंकर और इंसान को भगवान बना देती है।

मन में काफी समय से शांतिनाथ विधान लिखने का भाव था उन भावों को शब्दों का रूप दिया। आप इन भावों के साथ शामिल होकर प्रभु की भक्ति करें और संकट बाधायें दूर कर, पापों का नाश करें।

—आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण

श्री शांतिनाथ विधान महिमा

भरत क्षेत्र के आर्य खंड में भारत देश है। भारत देश की मथुरा नगरी का शासक, जो राजनीति में निपुण, न्याय प्रिय, वीर, प्रजा का पालक और कुशल संचालक था। एक बार दैव योग से दुर्भिक्ष फैल गया। महा भंयकर महामारी फैली। किन्नर ने यह व्याधि फैलाई थी। अनेक लोग कुछ ही दिनों में मरने लगे। ग्राम निवासी मथुरा नगरी छोड़कर जाने लगे।

शुक्ल त्रयोदशी के दिन सेठ सुमति वहां पर आए। वर्षा के मेघ देखकर प्रसन्न हुए किन्तु जब नगरी में प्रवेश किया तो व्याकुल हो गये। वहां के जिनालय को देखा और वहां पूजा की। वहीं एक मुनिराज के दर्शन हुये। विनय भक्ति पूर्वक मुनिराज के दर्शन कर उनसे नगरी में फैली दुर्भिक्ष महामारी का कारण पूछा और उसको दूर करने का उपाय पूछा। तब मुनिराज ने शांति विधान करने का उपदेश दिया और मंत्र का जाप करने को कहा। इस मंत्र का जाप करने से मन शांत और शुद्ध होता है। विघ्नों का नाश होता है। पुण्य कोष भरता है। धन, संपत्ति, अधिकार का मिलना तो साधारण बात है, इस मंत्र से ज्ञान सूर्य का प्रभात होता है।

इस विधान को शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन से सोलह दिन तक करना चाहिये और 1000 मंत्र अर्थात् 10 माला प्रतिदिन करना चाहिये। अंतिम दिवस विधान के पश्चात हवन करना चाहिये। इस प्रकार इस विधान को करके मनवांछा पूरी करें।

—आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण

सागर में गोता लगाने पर मोती न मिले
तो ये मत मानो कि सागर में मोती नहीं।
धर्म से ही शांति मिलेगी, आज नहीं तो कल।

मिताक्षर

शान्ति विधान की रचना आज से लगभग 2100 वर्ष पहले हुयी थी। जो सर्वप्रथम संस्कृत भाषा में लिखा गया था। बाद में पं. तारा चन्द्र जी रेवाड़ी वालों ने सर्वप्रथम इसका हिन्दी में अनुवाद किया था। उसके बाद ब्र. सूरज मल जी एवं अन्य विद्वानों द्वारा इसकी रचना की गयी है।

इसके बाद विदुषी पूज्या आर्यिका रत्न स्वस्ति भूषण माता जी ने जो शान्ति विधान की रचना की उसमें विशेषता यह है कि सर्वप्रथम संस्कृत में रचे गये शाक्ति विधान में जिस प्रकार एक ही भगवान की स्थापना को बार–बार करना उचित नहीं समझा। उन्हीं लेखक के अभिप्राय को ध्यान में रखकर माता जी ने भी एक ही बार स्थापना का विधान किया है। साथ ही इस विधान में माता जी ने बड़े ही सुन्दर ढ़ंग से भक्ति के भावों को संजोया है जो प्रत्येक भक्त के हृदय को झंकृत कर देते हैं माता जी के द्वारा अब तक अनेक विधान लिखे जा चुके है।

इस प्रकार लगभग शताधिक कृतियां माता जी के द्वारा लिखी जा चुकी हैं। माता जी इसी तरह अध्ययन साधना के द्वारा आत्म कल्याण करते हुए जिन शासन की प्रभावना करती रहें इसी मंगल भावना के साथ

–ब्र. पवन जैन सिद्धान्तरत्न न्यायरत्न
(वर्तमान मे मुनि श्री 108 निर्दोष सागर जी महाराज)
–ब्र. कमल जैन सिद्धान्तरत्न न्यायरत्न
(वर्तमान मे मुनि श्री 108 निर्लोभ सागर जी महाराज)

श्री पार्श्वनाथ दि. जैन शान्ति निकेतन
उदासीन आश्रम ईसरी बाजार
(झारखण्ड)

भक्ति के भाव

आज के युग में हर व्यकित शांति से जीना चाहता हैं, परन्तु यह शांति उस व्यक्ति को कहां मिलेगी वह नहीं जानता। जब तक मन में शांति नहीं होगी तब तक वह व्यक्ति परेशान ही रहता है। जी हां, उसी मन की परेशानी को दूर करने के लिये, मन में शांत भावों की निर्मलता लाने के लिये, यह शांतिनाथ विधान आपके हाथों में है। जिसको रचने वाली काव्य हृदय, सरल स्वाभावी, मृदु भाषिणी, परम विदुषी लेखिका आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी हैं। इस विधान में माता जी ने ऐसे सुंदर एवं सरल भावों का चित्रण किया है कि जिसको पढ़ने ही मन शांति से ओत–प्रोत हो जाता है। मन में आत्मिक शांति उत्पन्न होती है। पूज्य माता जी ने ऐसे सुंदर छंदो एवं पद्यों का प्रयोग इस विधान में किया है जिसको पढ़ने से भावों में परिवर्तन स्वयं हो जाता है। पूज्य माता जी ने दुःखों से मुक्ति दिलानें के लिये प्रभु की निस्वार्थ भक्ति रूपी नौका ही संसार से पार करने वाली बताई है। इस विधान को करते हुये इन्द्र इंद्राणी एवं श्रोतागण भक्ति में झूमते हैं और भाव विभोर होकर भक्ति में ऐसे लीन हो जाते हैं मानो वह साक्षात् इंद्र बनकर स्वर्ग पहुंच गये हों। यह विधान इतना रसमय है कि इसका स्वाद वही जानता है जिसने इस विधान को किया है।

इस विधान को पूज्य माता जी ने चार वलयों में समाहित किया है। जिसके प्रथम वलय में अष्ट प्रातिहार्य के आठ अर्घ्य, द्वितीय वलय में पंचपरमेष्ठी के पांच कर्मों के आठ और रत्नत्रय के तीन अर्घ्य, तृतीय वलय में जिन प्रभु की पूजा का बत्तीस अर्घ्यों द्वारा अनुपम संयोजन प्रस्तुत किया है एवं चतुर्थ वलय में सम्पूर्ण दुःखों को दूर करने वाले एवं मन को एकाग्र करने वाले चौंसठ अर्घ्यों का वर्णन है।

पूज्य माता जी की लेखनी के द्वारा लिखित अभी तक चालीस, विधानों को सम्पूर्ण देश में सराहा जा रहा है, कुल मिलाकर माता जी ने शताधिक पुस्तकों को रचकर जन–जन को धर्म की राह दिखाई है। इन कृतियों में रचित गुणों का अनुरागी भक्त जब तन्मय होकर भक्ति करता है तब अनंत समय से संचित अशुभ कर्म भी विलीन होने लगते हैं। एवं पुण्य का संचय होता है जो सद्गति का कारण बनता है। अतः आप इस विधान के द्वारा भगवान की भक्ति करके अनुपम आनंद एवं सातिशय पुण्य का संचय करें।

पूज्य माता जी के चरणों में कोटी–कोटी वंदामि, वंदामि, वंदामि।

शालू दीदी, (संघस्थ)

श्री शान्तिनाथ विधान

माँडला

श्री शान्तिनाथ विधान

शंभू छंद (स्थापना)

हे शांति प्रभो, हे शांति प्रभो, पूजा करने हम आये हैं।
आठों कर्मों के नाश हेतु, हम अष्ट द्रव्य को लाये हैं।।
तेरी सुंदर छवि को लखकर, मुझे आज धर्म का ज्ञान हुआ।
तेरे गुण गाने को प्रभुवर, संकल्प भक्ति का आज लिया।।
यह जन्म सफल हो जायेगा, जीवन भी सार्थक करना है।
भव सागर पार करूं जिनवर, कर्मों के पर्वत हरना है।।
आओ आओ, हे शांति प्रभो, हम हृदय वेदिका लाये हैं।
तेरी पूजा करने भगवन, चरणों में तेरे आये हैं।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम चित्र नहीं चारित्र लखें, तो मन निर्मल हो जायेगा।
निर्मल मन निर्मल वाणी से, संतोष सुखामृत पायेगा।।
रत्नत्रय गंगा में जिनवर, स्नान हेतु हम आयें हैं।
कर्मों की मैल धुलें जिससे, आतम शुद्धि को पाये हैं।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यक्ति तो अपनी शक्ति को, पहचान अभी तक न पाया।
इसलिये जगत की चिंता कर, दुख सागर में गोता खाया।।
चंदन सम शीतल शांतिनाथ, मन में शांति अमृत भर दो।
चंदन ले पूजा हम करते, संतप्त क्रोध को तुम हर दो।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग आकांक्षा भटकाती है, स्थिरता मुझमें न आई।
चंचल मन दुख का कारण है, शाश्वत पदवी भी ना पाई।।
अक्षय पद धारी शांतिनाथ, क्षयवत् को अक्षय कर देना।
अक्षत ले पूजा करते हैं, चंचल मन की पीड़ा हरना।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय सुख के भंवरे हैं हम, और डूब इसी में मर जाते।
वैराग्य भावना ना भायी, इससे जग में चक्कर खाते।।
आतम खुशबू लेने चाले, श्री शांतिनाथ की भक्ति करूं।
हम काम वासना से छूटे, भव भ्रमण व्याधि को शीघ्र हरूं।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तन को भोजन देते हैं नित, पर काम धर्म का ना लेते।
संयम मय जीवन हो जाये, तप से कर्मों को तज देते।।
आनंद अमृत पीने वाले, हे शांतिनाथ पथ दिखलायें।
आतम अमृत का पान करूं, आतम आनंद का रस पायें।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदा सूरज आते जाते, दिन रात बने, जीवन बीता।
इसको ही उजियारा समझा, आतम उजियारा था रीता।।
हे दिव्य ज्ञान के तेज पुंज, श्री शांतिनाथ जी तम हर दो।
मन ज्ञान दीप से जगमग हो, अब सम्यग्ज्ञान रतन भर दो।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों की वायु चले, कर्मों के फल में लीन रहूँ।
सम्यक पुरूषार्थ ना कर पाया, इससे ही आकुल व्याकुल हूँ।।

मुक्ति के राजा शांतिनाथ, अपनी छाया में बैठाओ।
मानस में अंकित शूलों को, फूलों सम उसको मंहकाओ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम मोह रहित और राग रहित, भक्तों को अपने अपनाते।
इसलिये कष्ट ना होता है, आनंद फल हर क्षण तुम पाते।।
आनंद फलों की प्राप्ति हेतु, श्री शांतिनाथ की भक्ति करूं।
फल मुक्ति का यदि मिल जाये, क्षण में भवसागर पार करूं।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वापामीति स्वाहा।

मैं क्रोधी हूँ मैं लोभी हूँ, मैं मानी हूँ मायाचारी।
दिन रात इसी में उलझा हूँ, इससे सारी दुनिया हारी।।
हे शांतिनाथ सम्यक् दृष्टि, बन सम्यक् भाव को पाना है।
आठों द्रव्यों का थाल सजा, चरणों में तेरे आना है।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

सुख की आशा को लिये, आया तेरे द्वार।
शांतिनाथ भगवान को, प्रणमूं बारंबार।।

प्रथम वलय

अष्ट प्रातिहार्य गुण अर्घ्यावली

चौपाई छंद

तरू अशोक के नीचे जिनवर, बैठे उनकी छवि है मनहर।
रोग शोक मेरे मिट जावें, शांति प्रभु की छाया पावें।।1।।

ॐ ह्रीं अशोक तरू सत्प्रातिहार्य मंडिताय अशोकतरू प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प वृष्टि चरणों में होती, भक्त को सुख के मिलते मोती।

भक्त भक्ति की खुशबू पायें, शांति प्रभु को शीश झुकायें।।2।।

ॐ ह्रीं सुर पुष्प वृष्टि सत्प्रातिहार्य मंडिताय सुर पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय भ्म्ल्वर्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग मोक्ष पथ को दिखलाते, दिव्य ध्वनि से ज्ञान को पाते।
दिव्य वाणी सुन शांति पाऊँ, शांति प्रभु को शीश झुकाऊं।।3।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय म्म्ल्वर्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल चमर ढुरें जिनवर पर, इंद्र देव की सेवा जहां पर।
वह वायु हमको भी छू ले, जिनवर के आशीष को ले लें।।4।।

ॐ ह्रीं चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य मंडिताय चामरोज्ज्वल प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय रम्ल्वर्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी स्वर्णिम सिंहासन, जिनवर बैठे हैं पद्मासन।
आतम का आसन हम पायें, शांति प्रभु को शीश झुकायें।।5।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य मंडिताय सिंहासन प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय घ्म्ल्वर्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भामंडल की किरणें फैलीं, भक्तों ने आ शक्ति ले ली।
शांति प्रभु की किरण शांत हैं, टूटे मन की सभी भ्रांत हैं।।6।।

ॐ ह्रीं भामंडल सत्प्रातिहार्य मंडिताय भामंडल प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय ख्म्ल्वर्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यश गाते हैं दुंदुभि बाजा, भक्त से कहते आजा–आजा।
यश गुण गाथा हम भी गायें, शांति प्रभु को शीश झुकायें।।7।।

ॐ ह्रीं दुंदुभि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दुंदुभि प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय झ्म्ल्वर्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्र की छाया प्रभु के सिर पर, प्रभु की छाया भक्त के सिर पर।

बैठ छाया में शांति पाई, शांति प्रभु की महिमा गाई।।8।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य मंडिताय छत्रत्रयप्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

मन वच तन निर्मल किया, निर्मल हैं जिनदेव।
प्रथम वलय के अर्घ्य से, करूँ चरण की सेव।।

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य सहिताय अष्टबीज मंडन मंडिताय सर्वविघ्न शांतिकराय श्री शांतिनाथजिनाय प्रथम वलय मध्ये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्रीफल चढ़ायें)

द्वितीय वलय

पंच परमेष्ठी, रत्नत्रय एवं अष्ट कर्म निवारण अर्घ्यावली

गीता छंद (तर्ज–प्रभु पतित. . .)

अरिहंत जिनवर के चरण को, इंद्र गण पूजे सदा।
हम भी करें भक्ति जो इनकी, सौख्य संपद हो सदा।।
संपदा शाश्वत नहीं हैं, झोली फिर भी भरते हैं।
आत्मा के ध्यान में रह, कष्ट सबके हरते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत विदेहादिशतैकसप्ततिक्षेत्रार्यखण्डे भूत भविष्यत् वर्तमानार्हत्परमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामलतरखण्डोज्झित निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति सदन में वास करते, ना जगत में आयेंगे।
आतम से आतम ध्यान कर, आतम का आनंद पायेंगे।।
आठों करम के नाश हेतु, अर्घ्य ले कर आयें हैं।
मुक्ति सदन में वास होवे, अर्जी चरणों लाये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत विदेहादिशतैकसप्ततिक्षेत्रार्यखण्डे

भूत भविष्यत् वर्तमानसिद्धपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामलतरखण्डोज्झित निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चलते स्वयं मुक्ति के पथ पर, शिष्य संघ में चालते।
पालन करें सारे व्रतों का, शिष्य संघ में पालते।।
आचार्य गुरूवर की शरण से, मुक्ति पथ रस्ता मिला।
जग की सभी झंझट मिटी, और सुख का उपवन अब खिला।।3।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत विदेहादिशतैकसप्ततिक्षेत्रार्यखण्डे भूत भविष्यत् वर्तमानसर्वाचार्य परमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामलतरखण्डोज्झित निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान अध्ययन में सदा, जिनका समय है बीतता।
और शास्त्र आगम के हैं ज्ञाता, अन्य मत को जीतता।।
शुभ ज्ञान सच्चा पानें को, हम अर्घ्य चरणों लाये हैं।
अज्ञान तम छुपने लगा, रवि ज्ञान ज्योति पाये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत विदेहादिशतैक – सप्ततिक्षेत्रार्यखण्डे भूत भविष्यत् वर्तमान पाठक परमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामलतरखण्डोज्झित निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं ढाई द्वीप के मुनिवरों की, वंदना करता रहूँ।
वे हैं तपस्वी औ यशस्वी, गीत मैं गाता रहूँ।।
अध्यात्म चर्या ज्ञान चर्चा, ये ही जिनका लक्ष्य है।
जीवन्त शास्त्र जो बन गये, मुक्ति पथिक वे दक्ष हैं।।5।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत विदेहादिशतैक – सप्ततिक्षेत्रार्यखण्डे भूत भविष्यत् वर्तमान सर्वसाधु परमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामलतरखण्डोज्झित निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हंत वाणी गुरुवरों पर, पूर्ण मम श्रद्धान हो।
पूजा करूँ भक्ति करूँ फिर, न कोई व्यवधान हो।।
जिससे कि सम्यग्दर्श हो, हम भाव ऐसे भावते।
सम्यक्त्व बिन अब तक जगत में, गोता हम हैं खावते।।6।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे शुद्धसम्यक्त्वामलतरखण्डोज्झित निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व दोषों से रहित है, वीर जिनवर भारती।
स्वाध्याय, अध्ययन हम करें, संग में उतारें आरती।।
बिन ज्ञान जप तप पूजा भी, संसार का कारण बनें।
यदि होय सम्यग्ज्ञान तो, कर्मों को शीघ्र ही हम हनें।।7।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यग्ज्ञानामलतरखण्डोज्झित निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज श्रावक के व्रतों की, चर्या ही चारित्र है।
पालन करें निर्दोष इसको, साफ होगा चित्र है।।
संयम नियम लेकर के जीवन, अब जगत में जीना है।
संकट दुखों का नाश होगा, अमृत धरम का पीना है।।8।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यक्चारित्रामलतरखण्डोज्झित निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानता ऐसी बसी है, जड़ को अपना मानते।
जड़ करम जड़ को ही बुला, चेतन को दुख में सानते।।
ज्ञानावरण इस कर्म को, हम नाशने प्रभु आये हैं।
श्री शान्ति प्रभु की भक्ति में, यह अर्घ्य चरणन लाये हैं।।9।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्ममहाबन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बस देखता संसार को मैं, निज को ना देखा कभी।
मोह की पट्टी को बांधे, झूमते जग में सभी।
हम कर्म दर्शन आवरण को, ही जलाने आये हैं।
शांति प्रभु की भक्ति में, यह अर्घ्यं चरणन लायें हैं।।10।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म बन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख में सुखी दुख में दुखी हो, कर्म फल को भोगते।
आतम कहानी ना पढ़ी, जग के पदारथ मोहते।।

अब वेदनी की वेदना को, नाश करने आये हैं।
शांति प्रभु की भक्ति में, यह अर्घ्य चरणन लाये हैं।।11।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म बन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह ने मोहा जगत को, आप मोहित ना हुऐ।
निज आत्मा का ध्यान कीना, भक्त ने चरणा छुये।।
हम मोह कर्म को नाशने को, पूजा तेरी गाते हैं।
शांति प्रभु की भक्ति में, यह अर्घ्यं चरणों लाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं प्रचण्डमोहनीयकर्मबन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म की जेल में, हम बंद होकर के जिये।
मुक्ति के वासी मुक्त होकर, आत्म अमृत को पिये।।
आयु करम की जेल छूटे, भाव लेकर आये हैं।
शांति प्रभु की अर्चना में, अर्घ्यं चरणन लाये हैं।।13।।

ॐ ह्रीं आयुः कर्मबन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस तन की रचना नाम करता, कर्म का फल है कहा।
इस तन को पोषा काम न कर, जग के दुःखों को सहा।।
हम नाम कर्म का नाम मेटें, भाव चरणों लाये हैं।
शांति प्रभु की भक्ति में, यह अर्घ्य चरणों लाये हैं।।14।।

ॐ ह्रीं नामकर्म बन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपर्दव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह गोत्र कर्म के हेतु से, ऊंचा बने नीचा बने।
पुरुषार्थ यदि अच्छा करें तो, नीचा भी ऊंचा बने।।
दोनों रहित होकर के हमको, सिद्ध पद को पाना है।
श्री शांति प्रभु की भक्ति करके, शांति सुख को पाना हैं।।15।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्म बन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधायें आयें कार्य में, परेशान जीवों को करें।

बाधा रहित सुखधारी प्रभुवर, मेरी बाधायें हरें।।
इस अंतराय के नाश हेतु, भक्ति करने आये हैं।
श्री शांति प्रभु की भक्ति में, यह अर्घ्य चरणों लाये हैं।।16।।

ॐ ह्रीं अंतरायकर्म बन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

मुझको वह गाड़ी मिले, बैठ मुक्ति में जायें।
मंजिल पर पहुंचायेगी, शत–शत शीश झुकायें।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठी पदप्रदाय दर्शनज्ञानचारित्रकारकाय अष्टकर्म निवारकाय श्री शांतिनाथाय द्वितीय वलयमध्ये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय

बत्तीस इंद्रो से पूतिज जिनप्रभु अर्घ्यावली

चाल–जोगीरासा (इही बिधी राज करे नर नायक...)

शांति प्रभु की पूजा करने, असुर इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।1।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, नाग इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।2।।

ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, विद्युत इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निवपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, सुपर्ण इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।4।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, पावक इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।5।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, मारूत इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके मेरा मन हर्षाया।।6।।

ॐ ह्रीं वातकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने स्तनित इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।7।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, सागर इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।8।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने द्वीप इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।9।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, दिक्सुर इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।10।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, किन्नर इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।11।।

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, किम्पुरुष इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।12।।

ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, महोरग इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।13।।

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, गन्धर्व इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।14।।

ॐ ह्रीं गन्धर्वेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, यक्ष इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।15।।

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, राक्षस इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।16।।

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, भूत इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।17।।

ॐ ह्रीं भूतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, पिशाच इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।18।।

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, चंद्र इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।19।।

ॐ ह्रीं चन्द्रेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, भास्कर इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।20।।

ॐ ह्रीं भास्करेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, सौधर्म इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।21।।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, ईशान इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।22।।

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, सनत इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।23।।

ॐ ह्रीं सनतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, माहेन्द्र इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।24।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, ब्रह्म इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।25।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, लान्तव इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।26।।

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, शुक्र इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।27।।

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, शतार इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।28।।

ॐ ह्रीं शतारेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, आनत इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।29।।

ॐ ह्रीं आनतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, प्राणत इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।30।।

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, आरण इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।31।।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की पूजा करने, अच्युत इंद्र भी आया।
भक्ति भाव से पूजा करके, मेरा मन हर्षाया।।32।।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वर प्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

बत्तीस इंद्र के नाथ हो, करें आपकी सेव।
चरण शरण मुझको मिले, जय जिनवर जिनदेव।।

ॐ ह्रीं चतुर्णिकाय देवेन्द्र पूजिताय श्री शांतिनाथाय तृतीय वलयमध्ये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

चौंसठ भक्ति की अर्घ्यावली

चाल छंद (तर्ज–ऐ मेरे वतन के...)

मन में विकार है भारी, हम दुखी हुऐ संसारी।
मन के सब दोष मिटायें, श्री शांति शरण में आयें।।1।।

ॐ ह्रीं मानसिक विकारोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों में दोष भरा है, वाणी में जहर भरा है।
वचनों के दोष मिटाऊँ, श्री शांति शरण में आऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं वाचनिक विकारोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया भी पाप कराये, जिनवर जी दोष हटायें।
काया की शक्ति पाऊँ, श्री शांति शरण में आऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं कायिक विकारोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घर नगर उपद्रप होवे, पूजा से दुख को खोवे।
प्रभु पूजा कष्ट मिटावें, श्री शांति शरण को पावें।।4।।

ॐ ह्रीं राजलक्ष्मीपुरराज्यगेहपद भ्रष्टोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरव के कर्म सतावें, धनहीन बने दुख पावें।
निर्धनता नाथ भगायें, श्री शांति प्रभु गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं दारिद्रयोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्याधि तन में है आयी, पीड़ा भारी दुखदायी।
तन रोग दूर प्रभु करना, आया श्री शांति शरणा।।6।।

ॐ ह्रीं भीमभगन्दरगलितकुष्ठगुल्मरक्तपित्तवातकफस्फोटकाद्युपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसे चाहे दूर वो जाये, न चाहा पास में आये।
यह कष्ट दूर हो जाये, श्री शांति शरण में आये।।7।।

ॐ ह्रीं इष्टवियोगानिष्टसंयोगोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रु हमें नित्य सताये, शांति को दूर भगाये।
शत्रु को मित्र बना दो, मुझे ऐसी कला सिखा दो।।8।।

ॐ ह्रीं स्वचक्रपरचक्रोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शस्त्रों ने तन को घाता, ना मिली मुझे जी साता।
आयुध का भय विनशायें, श्री शांति शरण में आयें।।9।।

ॐ ह्रीं विविधायुधोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल में हैं जलचर प्राणी, उपदेश देय जिनवाणी।
जल जीव का भय विनशायें, श्री शांति शरण में आयें।।10।।

ॐ ह्रीं दुष्टजलचरजीवोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वनचर पशु भय दिखलावें, कभी चोट भी उनसे खावें।
भयहारी भय विनशायें, श्री शांति शरण में आयें।।11।।

ॐ ह्रीं व्याघ्रसिंहगजादिवनपर्वतवासिश्वापदाद्युद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूचर खेचर के प्राणी, करते हैं वे मनमानी।
करते हैं उपद्रव भारी, श्री शांति शरण दुख हारी।।12।।

ॐ ह्रीं भूचरगगनचरक्रूरजीवोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिच्छू सृप हैं जहरीले, काटें तो हम हो नीले।
भक्ति ने जहर को नाशा, शांति की शरणा वासा।।13।।

ॐ ह्रीं व्यालवृश्चिकादिविषदुर्द्धरोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वि चतु पहिया के वाहन, दुर्घटना के भी साधन।
दुर्घटना दूर भगावें, जो शांति प्रभु को ध्यावें।।14।।

ॐ ह्रीं वाहनोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू गगन में चलते वाहन, दुर्घटना के भी साधन।
दुर्घटना दूर भगावें, जो शांति प्रभु को ध्यावें।।15।।

ॐ ह्रीं वायुमार्गोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्म असाता आवे, अग्नि के दुख को पावे।
शांति का जल बरसायें, जो शांति शरण में आयें।।16।।

ॐ ह्रीं दावानलोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

वायु जब वेग से आवे, तूफान बने दुख देवे।
शांति प्रभु शरण में आओ, चरणों में अर्घ्य चढ़ाओ।।17।।

ॐ ह्रीं प्रचण्डपवनोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलयान में यात्रा करते उसमें भी संकट आते।
संकट से हमे उबारो, प्रभु मेरी ओर निहारो।।18।।

ॐ ह्रीं नौका स्फोटपतनोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जंगल में कभी वे जावे, उपसर्ग वहां भी आवे।
प्रभु वन को भवन बना दो, कष्टों के शूल हटा दो।।19।।

ॐ ह्रीं वन नग मेदिनी भयंकरोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरिता, सर घूमन जावे, आफत सर पर आ जावे।
उपसर्ग औ भय विनशाये, जो शांति शरण में आये।।20।।

ॐ ह्रीं नदीसरोवराब्धिकूपह्रदोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई छंद

वर्षा ओला पाता होवे, पीड़ित मानव इससे रोवे।
शांति जल शांति को देवे, जो भी शांति शरण में होवे।।21।।

ॐ ह्रीं विद्युत्पातादिभीमाम्बुवृष्टयुपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रु युद्ध करने को आवें, शस्त्र घात से तन विनशावें।
शांतिप्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।22।।

ॐ ह्रीं संग्रामस्थलारिनिकटोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

डाकिनि शाकिनि भूत प्रेत हैं, कर्मों को बस दुःख देत हैं।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।23।।

ॐ ह्रीं डाकिनी शाकिनी भूतप्रेत पिशाचादिभय निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घर दुकान में टोटका करते, स्तंभन मोहन कर धरते।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।24।।

ॐ ह्रीं मोहनस्तम्भनोच्चाटनप्रमुखदुष्टविद्योपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म उदय जब मेरा आया, नव–ग्रहों ने हमें सताया।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।25।।

ॐ ह्रीं दुष्टग्रहाद्युपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोह श्रृंखला कारागार में, बंधन के दुख संग प्रहार में।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।26।।

ॐ ह्रीं श्रृंखलाद्युपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरी आयु ना जी पावें, अल्पायु में मृत्यु पावें।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।27।।

ॐ ह्रीं अल्पमृत्युपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब दुर्भिक्ष नगर में फैले, भूख प्यास बाधायें सहलें।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।28।।

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज व्यापार में बाधा आवें, वृद्धि न हो धन नश जावें।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।29।।

ॐ ह्रीं व्यापारवृद्धिरहितोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संबंधी परिवार विरोधी, इनका जग में नहीं विरोधी।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।30।।

ॐ ह्रीं बन्धुत्वोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन संतान जगत है सूना, बिना ज्ञान के दुख है दूना।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।31।।

ॐ ह्रीं अकुटुम्बोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपकीर्ति में जलता हूँ मैं, पल–पल मन दुख सहता हूँ मैं।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।32।।

ॐ ह्रीं अपकीर्त्युपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो कल्याण सभी जीवों का, कर्त्ता हूँ मैं इन भावों का।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।33।।

ॐ ह्रीं संम्पूर्णकल्याणमंगलप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंतामणि के सम जिनवर हैं, अतिशय कारी जिन मनहर हैं।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।34।।

ॐ ह्रीं चिंतामणिसमानचिन्ततफलप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष सम फल के दाता, पाप ताप संताप मिटाता।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।35।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षसमकल्पितार्थफलप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामधेनू शुभ पूरण कारी, आनंद दायक हैं हितकारी।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।36।।

ॐ ह्रीं कामधेनूसमकामनापूर्णफलप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म ध्यान परमोज्ज्वल धर्म, बाधा दूर करें शुभ कर्म।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।37।।

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलधर्मध्यानबाधारहिताय अनवद्यबोधप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव सम रूप को पावें, जो निशदिन प्रभु पूजा गावें।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।38।।

ॐ ह्रीं कामदेवस्वरूपप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सम खुशबू तन पायें, जो प्रभु अर्चन नित ही गायें।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।39।।

ॐ ह्रीं सुगन्धितशरीरप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य प्रभु ये भक्त कमल हैं, रवि उगे तो खिले कमल हैं।
शांति प्रभु को हृदय में रखना, सब बाधायें शीघ्र ही हरना।।40।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथाह्लादकारकपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर चाल (तर्ज – दे दी हमें आजादी. . .)

उज्जवल हैं क्षीर सिन्धु के सम आप विधाता।
सुरनर सभी यश गान गायें, देते हो साता।।
चक्री थे कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।41।।

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलगुणसहितपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाचस्पति के ही समान, पद को वो पाते।
जो आपकी महिमा बखान, करते कराते।।
चक्री थे कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।42।।

ॐ ह्रीं वाचस्पतिसमानपद पदप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् खंड अधिकारी, चक्रवर्ती कहाये।
जिनदेव तेरी पूजा ये, पदवी को दिलाये।।
चक्री थे कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।43।।

ॐ ह्रीं चक्रवर्तिपद पदप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोनों कुलों में शांति–शांति शांति ही आये।
भगवान को जो पूजता वो मुक्ति को पाये।।
चक्री थे कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।44।।

ॐ ह्रीं उभयकुलकमलविकासनसूर्यांशुसमाचरणप्रतिष्ठितगुण मण्डिताय अत्यन्त सुंदराकृतिपुत्रवन्तोगेहमण्डन पदप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक के पूर्ण नियम को भी, पालता है वो।
अरिहंत देव अर्चना को, गावता है जो।।
चक्री थो कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।45।।

ॐ ह्रीं श्रावकसद्वृत्तकरणबुद्धिपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आधार ही भक्ति को बना, जीवता है जो।
उज्ज्वल परम है कीर्ति सौख्य, पावता है वो।।
चक्री थो कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।46।।

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलकीर्तिपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याण कारी लक्ष्मी भी, दासी बनी है।
शुभ भाव से जिन पूजता, वो होय धनी है।।
चक्री थो कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।47।।

ॐ ह्रीं कल्याणकरराजधनसमलक्ष्मीप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिर्यंच नरक में कभी, जिन भक्त ना जाता।
नर देव की पर्याय पाके, मुक्ति को पाता।
चक्री थो कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।48।।

ॐ ह्रीं नरकतिर्यंग्गतिरहितनरसुरगतिसहितभवप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह ही भावना को भायें, शक्ति दीजिये।
निश्चय ही तीर्थंकर बनें, वरदान दीजिये।।
चक्री थो कामदेव शान्ति नाथ हमारे।

वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।49।।

ॐ ह्रीं षोडशकारणभावनासाधनबलप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह ही स्वप्न देखती, जिननाथ की माता।
माता बनी सौभाग्य है मिलती बड़ी साता।।
चक्री थो कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।50।।

ॐ ह्रीं जिनजननीतुल्यैकजननीपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पंचमेरू पे न्हवन, जिन नाथ का होता।
जिन अर्चना का भाव अशुभ, कर्म को खोता।।
चक्री थो कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।51।।

ॐ ह्रीं मेरूशिखरे स्नानयुक्त पदप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार की नश्वर सभी माया को है जाना।
घरबार छोड़ आत्मा का पहना है बाना।।
चक्री थो कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।52।।

ॐ ह्रीं सिद्धसाक्षिदीक्षाकारिभवप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भक्ति से तन शक्तिमान हो ही जाता है।
उस तन से ध्यान लीन हो तो मोक्ष पाता है।।
चक्री थो कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।53।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव की भक्ति से सुख का फूल खिलेगा।
शुभ दर्श ज्ञान चरित का अमृत भी मिलेगा।।
चक्री थो कामदेव शान्ति नाथ हमारे।

वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।54।।

ॐ ह्रीं यथाख्यातरत्नत्रयाचरणयुक्तबलप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ध्यान से आतम स्वरूप दर्श पाना है।
जिनदेव की भक्ति से ही आनंद आना है।।
चक्री थे कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।55।।

ॐ ह्रीं स्वात्मध्यानामृतस्वादसहितभवप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थकरों का समवशरण भव्य बुलायें।
भक्ति से ऐसा होवे मेरा, भाव ये भायें।।
चक्री थे कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।56।।

ॐ ह्रीं समवशरणविभूतिपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल बचे बस ज्ञान और कुछ भी ना चाहूँ।
जिननाथ तेरी पूजा करके, भाव ये भाऊँ।।
चक्री थे कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।57।।

ॐ ह्रीं सत्केवलज्ञानविभूतिपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों करम को नाश सिद्ध आप हुये हो।
अविनाशी आत्मा का भाव, भाव लिये हो।।
चक्री थे कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।58।।

ॐ ह्रीं निरंजनपदप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस चित्त में प्रभु तुम ही आके, करो बसेरा।
आनंद ही आनंद होगा, मुक्ति सबेरा।।
चक्री हैं कामदेव शान्ति नाथ हमारे।

वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।59।।

ॐ ह्रीं चिदानंदकरणसमर्थाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुख चँद्र से अमृत झरे, भक्तों ने पिया है।
जिसने प्रभु पूजा करी, आनंद लिया है।।
चक्री थो कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।60।।

ॐ ह्रीं वचनानंदकरणसमर्थाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिननाथ के तन के अणु भी, शुद्ध दिव्य हैं।
जब दर्श करें भक्त तो, बस होते भव्य हैं।।
चक्री थो कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।61।।

ॐ ह्रीं कायानंदकरणसमर्थाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वार्थ सिद्धि से भी भक्त चरण में आये।
चिंतन में मनन ध्यान में जो शांति को ध्याये।।
चक्री थो कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।62।।

ॐ ह्रीं अर्थवर्गसिद्धसाधनकरणसमर्थाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर के गीत भक्त, वाणी वीणा से गाते।
संसार के सब सौख्य और, महिमा को पाते।।
चक्री थो कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।63।।

ॐ ह्रीं कामवर्गसाधनकरणसमर्थाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिननाथ की पूजा से धन्य देह को किया।
जिन भक्त ने भक्ति से मोक्ष, सौख्य भी लिया।।
चक्री हैं कामदेव शान्ति नाथ हमारे।
वंदन करूँ अर्चन करूँ सब अशुभ निवारे।।64।।

ॐ ह्रीं मोक्षवर्गसाधनसिद्धकरणसमर्थाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूणार्घ्य (शंभू छंद)

सौ इंद्रों से वंदित जिनवर, गुणगान सभी मिल करते हैं।
चौंसठ ऋद्धि के नाथ तुम्ही, पूजा से कर्म को हरते हैं।।
श्री शांतिनाथ शांति दाता, शांति का अमृत दे देना।
भक्तों की पीर हरो जिनवर, चरणों में अपने रख लेना।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिसमानांगाय श्री शांतिनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य – ॐ ह्रीं जगत शांति कराय सर्वोपद्रव शांति कराय श्री शांति नाथाय नमः।

जयमाला

दोहा

शांतिनाथ भगवान के, जग में भक्त अपार।
भव सिन्धू में डूबते, भक्त को लेय उबार।।
काम देव चक्री बने, तीर्थंकर पदधार।
भक्तों की रक्षा करी, मुक्ति गये सिधार।।

चौपाई

जय शांतिनाथ जग में महान, चरणों में करते हम प्रणाम।
जय शांतिनाथ शांतिदाता, जय शांतिप्रभू जग के भ्राता।।

जय गुण के सागर शांतिनाथ, भक्तों को दिखाते मुक्तिपाथ।
जय पाप नाश भी करते हो, भक्तों के दुखड़े हरते हो।।

सम्यग्दर्शन में कारण हो, भक्तों को भव से तारण हो।
तीनो लोकों के स्वामी हो, आपहि तो अंतर्यामी हो।।

जय क्रोध मान माया नाशी, मुक्ती देते मुक्ती वासी।
सब भूत प्रेत भी भग जावें, जो कर विधान गुण को गावें।।

बाधाएं दूर कराते हैं, जग के संकट विनशाते हैं।
जय चार चतुष्टय धारी हैं, आतम में आत्म बिहारी हैं।।

भव्यों का हृदय खिलाते हैं, दुश्मन को मित्र बनाते हैं।
धन संपति चरण की दासी हैं, भक्ति तो पुण्य की राशि हैं।।

जब प्रभु की चर्चा करते हैं, शांति की अर्चा करते हैं।
नवग्रह कृत बाधा दूर करो, ऊपर की बाधा आप हरो।।
तेरी भक्ति बिन रीते हैं, हम तेरे सहारे जीते हैं।
शान्ति प्रभु एक सहारा हैं, करते भवसिन्धु किनारा हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय सर्व शान्ति कराय महामृत्युंजयी श्री शान्तिनाथजिनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा!

दोहा

सकल विश्व में शांति हो, सबका हो कल्याण।
यही भाव मेरे हुए, ''स्वस्ति'' करे प्रणाम।।
।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री शान्तिनाथ भगवान आरती

शांति के दाता स्वामी, भक्तों के अंतर्यामी।
हम सब उतारें तेरी आरती, औ बाबा . . .

विश्वसेन के राजदुलारे, ऐरा गर्भ में आये,
गजपुर नगरी जनम लिया है, खुशियां जग में छाये।
बाबा, घर–घर में बजी बधाई, देवों ने भक्ति दिखाई।।
हम सब. . .

शांति प्राप्त हो हमको स्वामी, पुरुषारथ हम करते,
तेरे नाम को जपने से ही, शांति को हम वरते।
बाबा, अध्यात्मिक शांति पायें, तेरे सम हम बन जायें।।
हम सब . . .
संकटहारी सब सुखकारी, गुण गाने हम आये,
भक्ति अर्चना गाकर के हम, मन ही मन हर्षाये।
बाबा, चरणों में हमको रखना, भक्ति का अमृत चखना।।
हम सब . . .

श्री शान्तिनाथ चालीसा

दोहा

अरिहंत सिद्धाचार्य का, करते मंत्रोच्चार।
जिनवाणी के ज्ञान से, पावें सौख्य अपार।।
शांतिनाथ प्रभु का करूँ, हर पल मैं गुणगान।
चालीसा पढ़ भाव से, करता नित्य प्रणाम।।

चौपाई

शांति प्रभु का नाम है प्यारा, भक्तों का यह बने सहारा।
शांति प्राप्ति हेतु हम ध्याते, नित चरणों में शीश झुकाते।।

गजपुर नगरी धन्य हो गई, धर्म रत्न से यही छा गई।
विश्वसेन राजा परतापी, धर्म ध्यान से हुई थी व्यापी।।

रत्नों की वर्षा नित होती, हंस चुगें बस मोती–मोती।
ऐरा माँ के गर्भ में आये, माता का सौभाग्य जगाये।।

जन्म हुआ सुर घंटे बोले, इन्द्रों का सिंहासन डोले।
लेकर पांडुक वन में जाते, क्षीर सिन्धु जल न्हवन कराते।।

शांतिनाथ शुभ नाम रखा था, हिरण चिन्ह भी उन्हें दिखा था।
जन्मोत्सव की बजी बधाई, ''आनंद'' नाटक करें सुराई।।

हित मित प्रिय वाणी को बोलें, सबका मन आनन्द से डोले।
स्वर्ण रूप सम काया पाई, एक लाख आयु बतलाई।।

षोडश वर्ष के हुये कुमारा, यौवन में तब आये निखारा।
देवों सम सुख आपने पाया, चक्र रत्न भी आ प्रगटाया।।

चक्रवर्ती फिर आप कहाये, सब राजा आ शीश झुकाये।
चौदह रत्न सुशोभित होते, नवनिधियों से शोभित रहते।।

इक दिन दर्पण में मुख देखा, यह वैराग्य का कारण लेखा।
राज पाट को तृणवत छोड़ा, इन्द्रिय सुख से मुख को मोड़ा।।

तभी देव धरती पर आये, आकर के वैराग्य बढ़ाये।
क्षणभंगुर यह काया माया, इसने ही जग को भरमाया।।
सच्चा सुख आतम में आवे, इसके बाद न कुछ भी भावे।
यह चिन्तन जब प्रभु ने कीना, जग माया को झट तज दीना।।

"नमः सिद्ध" कह व्रतों को धारा, आतम का चारित्र निखारा।
लेकर मौन हुए सन्यासी, अब हो गए वे आत्म प्रवासी।।

निज आतम से रिश्तेदारी, आत्म आत्म में हुये बिहारी।
कर्म घातिया घात के स्वामी, केवल ज्ञान पाये जगनामी।।

नासा दृष्टि हिलें ना पलकें, ज्ञान में तीनों लोक हैं झलकें।
आपने घर सम्पत्ति को त्यागा, समवशरण अब आपका लागा।।

रत्न प्रकाश था सबसे नीका, सूर्य चाँद भी हो गया फीका।
स्वर्ण रत्न के बने थे द्वारे, स्वर्ग सम्पदा चरण पखारे।।

भक्तों का हुआ आना जाना, सम्यग्दर्शन आत्म को पाना।
शान्तिनाथ भगवान के चरणा, देते हैं हर भक्त को शरणा।।

जग में हमको कर्म सतायें, इसी से ना हम शान्ति पायें।
कर्म आपसे दूर भागते, आप सदा निज आत्म जागते।।

ऐसी युक्ति हमें बता दो, मुक्ति का रस्ता दिखला दो।
हम भी आतम ध्यान लगायें, जग की चिन्ता दूर हटायें।।

धर्म ध्यान में मन लग जाये, आतम की शान्ति को पायें।
कर्म धूप ने हमें सताया, मिली आपकी शीतल छाया।।

श्री सम्मेद से मुक्ति पाई, मुक्ति तुमको पा हर्षाई।
जग बंधन ढीले पड़ जायें, भक्त आपके मुक्ति पायें।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, पढ़ते मन हो साफ।
ऋद्धि सिद्धि समृद्धि हो, कर्म करेंगे माफ।।
शांतिनाथ भगवान जी, देना ये वरदान।
भक्ति नित करता रहूँ, बारम्बार प्रणाम।।

परम विदुषी लेखिका आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी द्वारा रचित कृतियां

श्री जिनपद पूजांजलि (विशेष कृति)

विधान संग्रह

1. श्री कल्पद्रुम विधान 2. श्री इन्द्रध्वज विधान 3. श्री सिद्धचक्र विधान 4. श्री सम्यक् विधान संग्रह 5. श्री मनुष्य लोक विधान 6. श्री श्रुत स्कन्ध विधान 7. श्री चौबीसी विधान 8. श्री नवग्रह शांति विधान 9. श्री कल्याण मंदिर विधान 10. श्री दश लक्षण विधान 11. श्री पंचमेरू विधान 12. श्री ऋषि मंडल विधान 13. श्री कर्म दहन विधान 14. श्री समवशरण विधान 15. श्री चौंसठ ऋद्धि विधान 16. श्री यॉग मंडल विधान 17. श्री पंच परमेष्ठी विधान 18. श्री पंच कल्याणक विधान 19. श्री वास्तु शुद्धि विधान 20. तीर्थकर विधान संग्रह 21. श्री पंच बालयति विधान 22. श्री सम्मेद शिखर विधान 23. श्री सोनागिर विधान 24. श्री सिद्धक्षेत्र गिरनार विधान 25. श्री आदिनाथ विधान 26. श्री पद्मप्रभु विधान 27. श्री चन्द्रप्रभ विधान 28. श्री वासुपूज्य विधान 29. श्री विमलनाथ विधान 30. श्री शान्तिनाथ विधान 31. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान 32. श्री नेमिनाथ विधान 33. श्री पार्श्वनाथ विधान 34. श्री महावीर विधान 35. श्री जम्बू स्वामी विधान 36. श्री भक्तामर स्तोत्र विधान, 37. श्री नन्दीशवरद्वीप लघु विधान, 38. श्री रत्नत्रय विधान, 39. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग -1, 40. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग-2, 41. श्री चरित्र शुद्धि विधान 42. श्री संभवनाथ विधान, 43. श्री सोलहकारण विधान, 44. श्री सुमतिनाथ विधान, 45. श्री अभिनंदन नाथ विधान, 46. श्री कुन्थुनाथ विधान, 47. श्री अजितनाथ विधान

काव्य संग्रह

1. मेरी कलम से 2. भजन संग्रह 3. भजन सरिता 4. अमृत की बूंदे 5. श्री सम्मेद शिखर चालीसा 6. बड़ा ही महत्व है 7. आरती ही सारथी 8. जिन ज्ञान किरण 9. भक्ति संग्रह 10. काव्य वाटिका (भाग-1, 2) 11. श्री भक्तामर जी पाठ (हिन्दी) 12. प्रभु भक्ति की पोटली (चालीसा संग्रह) 13. भक्ति पुंज 14. आत्मा की आवाज 15. विनयांजलि 16. श्री सहस नाथ स्तोत्र (हिन्दी रुपान्तरण) 17. पुण्य वर्धिनी 18. आचार्यो की प्रभु भक्ति (हिन्दी पद्यानुवाद) 19. भक्ति की संम्पदा (स्तोत्र संग्रह)

पूजन संग्रह

1. श्री सम्मेद शिखर टोंक पूजन 2. दीपावली पूजन 3. श्री आदिनाथ पूजन एवं चालीसा (रानीला) 4. श्री आदिनाथ पूजन अतिशय क्षेत्र (चाँदखेड़ी) 5. पद्म प्रभु पूजन (शाहपुर) 6. श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन संग्रह (सोनागिर जी) 7. श्री चन्द्र प्रभु पूजा (अतिशय क्षेत्र, तिजारा जी) 8. श्री चंद्रप्रभ चौबीसी जिनालय पूजन (कैराना) 9. श्री वासुपूज्य जिन पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र चंपापुरजी) 10. शांतिनाथ पूजन (सूर्य नगर) 11. श्री नेमीनाथ पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र गिरनार जी) 12. श्री पार्श्वनाथ पूजन एवं चालीसा 13. पार्श्वनाथ पूजन (जलालाबाद) 14. श्री पार्श्वनाथ, हांसी अतिशय क्षेत्र 15. अतिशय क्षेत्र बड़ागांव पूजा 16. श्री महावीर जिन पूजन संग्रह 17. स्वस्ति जिन अर्चना (सिद्ध क्षेत्र पावापुरजी) 18. श्री गोम्टेश्वर बाहुबली स्वामी विनयांजलि 19. कुंदकुंद स्वामी पूजा संग्रह, बारा (राजस्थान) 20. गुरू अर्चना (आ. 108 सन्मतिसागर जी) 21. श्री शांतिनाथ पूजा संग्रह (झालरापाटन) 22. श्री मुनि सुव्रतनाथ पूजन, भजन, चालीसा (जहाजपुर) 23. श्री मुनि सुव्रतनाथ पूजन एवं चालीसा (किरठल)

गद्य संग्रह

1. दीक्षा कठिन परीक्षा 2. जैन त्यौहार कैसे मनायें ? 3. प्रतिक्रमण (किये अपराध जो हमने) 4. स्वस्ति आत्म बोध 5. राग से वैराग्य की ओर 6. मुक्ति सोपान (धार्मिक सांप सीढ़ी) 7. श्री ऋषभदेव अनुशीलन 8. नानी की कहानी (भाग-1,2,3) 9. प्रभावना प्रवाह (भाग-1, 2) 10. आओ दीपावली पूजन करें 11. दीपावली कैसे मनायें। 12. टर्निंग पॉइण्ट (भाग-1, 2) 13. वीतरागी का आकर्षण 14. ऊँ नमः सबको क्षमा 15. आहार को समझे औषधि 16. स्मार्ट कौन? 17. आप V.I.P. है